जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 14 संख्याः 27 प्रभात चूरू, गुरुवार 26 मई, 2022 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

हाल ही में दुर्लभ कैलिफोर्निया कॉन्डोर को अमेरिका के नॉर्दर्न कोस्ट रैडवुड फॉरेस्ट में उड़ते देखा गया और सौ साल में पहली बार ऐसा हुआ है। संरक्षित केन्द्र में जन्मे और पले -बढ़े दो कैलिफोर्निया कॉन्डोर को रैडवुड नैशनल पार्क में छोड़ा गया। पसिफिक नॉर्थवैस्ट में इस विशाल वल्चर को पुनः बसाने के लिए चलाए गए प्रोजैक्ट के तहत यह कदम उठाया गया। बाद में दो कॉन्डोर और छोड़े गए। इस पार्क में आखिरी बार 1892 में कैलिफोर्निया कॉन्डोर देखा गया। कैलिफोर्निया कॉन्डोर नॉर्थ अमेरिका का सबसे बड़ा पक्षी है जिसके पंखों का फैलाव लगभग दस फीट (3 मीटर) है। कभी इस क्षेत्र में ये पक्षी बड़ी तादाद में नजर आते थे। पर 70 के दशक में ये लुप्त हो गए। विलुप्ति के मुख्य कारण थे, अवैध शिकार, शिकारियों द्वारा मारे गए जानवरों के शव खाने की वजह से होने वाली लैड पॉइजनिंग और आवास विनाश। ये पक्षी 60 साल तक जिंदा रह सकते हैं और भोजन की तलाश में बहुत दूर-दूर तक जाते हैं, इसलिए इनकी रेंज अमेरिका के कई स्टेट्स तक फैली हो सकती है। इसको पुनः बसाने का प्रोजैक्ट क्षेत्रीय यूरोक आदिवासियों ने शुरु किया था। जो इसे पवित्र मानते हैं। उनके इस प्रोजैक्ट में फैडरल एवं स्थानीय फिश एण्ड वाइल्डलाइफ एजेंसियां भी शामिल हैं। यूरोक आदिवासी कई वर्षों से अपने पूर्वजों की धरती पर इस पक्षी की वापसी का प्रयास करते रहे हैं। ट्राइबल चेयरमैन जोसफ एल- जेम्स ने एक बयान में कहा कि ''अनगिनत पीढ़ियों से यूरोक आदिवासियों ने नैचुरल वर्ल्ड में संतुलन कायम रखने की पवित्र जिम्मेवारी ले रखी है। कॉन्डोर का पुनर्वास पृथ्वी को भावी पीढ़ियों के लिए बचाए रखने की हमारी सांस्कृतिक प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति है।'' नैशनल पार्क में छोड़े गए चार कॉन्डोर में एक मादा व तीन नर हैं और इनकी उम्र 2 से 4 साल के बीच है। अस्सी के दशक के आरंभ में जंगल में मात्र 22 कॉन्डोर ही बचे थे, इन सभी को पकड़कर संरक्षित प्रजन केन्द्र में ले लाया गया था। सबसे पहले 1992 में सदर्न कैलिफोर्निया के लॉस पाडरेस नैशनल फॉरेस्ट में जाएंट कॉन्डोर छोड़े गए जो अपनी रेंज का विस्तार कर रहे हैं। अब इनकी आबादी 500 हो गई है। दो साल पहले कैलिफोर्निया के सिएरा नेवाडा के सकोया नैशनल पार्क में कैलिफोर्निया कॉन्डोर देखे गए , 50 साल में ऐसा पहली बार हुआ था। हालांकि उसी वर्ष जंगल में लगी आग में एक दर्जन वयस्क कॉन्डोर व दो बच्चे मारे गए थे।

कपिल सिब्बल का छोड़कर जाना राहत या आफत!

सिब्बल ने इस्तीफा देते हुए, पार्टी से संबंध कटु नहीं किये बल्कि कहा, वे कांग्रेस की ''भावना'' के साथ हैं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 25 मई। क्या पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथ सुप्रसिद्ध वकील कपिल सिब्बल का कांग्रेस से बाहर होना पार्टी के लिये एक आघात है, राहत है या दोनों का मिश्रण हैं?

उनका पार्टी छोड़ना दोनों का मिश्रण ही है क्योंकि इस प्रश्न के उत्तर में पहली दो बातें-आघात एवं राहत में से एक तो कही नहीं जा सकती।

दरअसल, राजनीति गणित नहीं, बल्कि एक जटिल विज्ञान है जिसमें अन्य चीजों की अपेक्षा समय बहुत महत्वपूर्ण कारक हुआ करता है। इस प्रश्न के उत्तर इस बात पर भी निर्भर करेंगे कि व्यक्ति राजनैतिक पालों में से किस पाले में खड़ा हुआ है।

आइये, सबसे पहले घटनाक्रम पर नजर डालें। सिब्बल ने आज कहा कि उन्होंने कांग्रेस पार्टी छोड़ दी है। उन्होंने यह विस्फोट उस समय किया, जब वे समाजवादी पार्टी- समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में राज्यसभा के लिये नामांकन पत्र भर चुके थे।

- **अतः यह भी माना जा सकता है कि, एक निर्दलीय सदस्य के रूप में सिब्बल राज्यसभा में विभिन्न पार्टियों के बीच सेतु का काम कर सकते हैं।**
- **जैसा कि, विदित ही है, सिब्बल के लालू, स्टालिन व चन्द्रशेखर राव से मधुर संबंध रहे हैं।**
- **समाजवादी पार्टी द्वारा राज्यसभा सीट के लिये सिब्बल का समर्थन भी अहसान का बदला चुकाने के समान है, क्योंकि सिब्बल की प्रभावशाली पैरवी के कारण, दो साल की कैद के बाद आज़म खान जेल से जमानत पर रिहा हो पाये हैं। हालांकि, सिब्बल अपनी सोची समझी रणनीति के तहत बार-बार यह दोहराते रहे कि, उन्होंने सपा ''जॉइन'' नहीं की है, बल्कि, एक निर्दलीय सदस्य बनने की उम्मीद रखते हैं।**

सिब्बल ने इस बात को रेखांकित करने की कोशिश की कि वे समाजवादी पार्टी में शामिल नहीं हुये हैं तथा कांग्रेस से बहुत दूर नहीं गये हैं एवं इसकी विचारधारा बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा पार्टी छोड़े जाने के कारणों को समझने की कोशिश करते समय इस परिदृश्य को ध्यान में रखा जाना जरूरी है।

निस्संदेह रूप से, सिब्बल एक प्रतिभाशाली वकील है तथा वे राजनैतिक मित्रों के लिये एक उपयोगी सम्पत्ति तथा प्रतिद्वन्दियों के लिए बहुत नुकसानदेह सिद्ध हो सकते हैं। इसलिये संसद में उनकी मौजूदगी आवश्यक है क्योंकि किसी बिन्दु पर समझदारीपूर्ण एवं सार्थक बहस कर सकते हैं। वे आर.एस.एस.-भाजपा के लिये भयोत्पादक शत्रु है, लेकिन चूँकि इस साल जुलाई के बाद, जब उनका कार्यकाल समाप्त होगा, कांग्रेस के पास इतना संख्या बल नहीं होगा कि वह उन्हें उच्च सदन (राज्यसभा) में भेज सके, इसलिये एक निर्दलीय सदस्य के रूप में राज्यसभा में उनकी मौजूदगी लम्बे समय तक विपक्ष की एकता के लिये काम करती रहेगी।

क्षेत्रीय नेताओं, जैसे- लालू यादव, तमिलनाडु तथा तेलंगाना के मुख्यमंत्री क्रमशः स्टालिन और के. चन्द्रशेखर राव के साथ उनके बहुत ही अच्छे संबंध हैं। एक वकील के रूप में उनकी उपयोगिता तथा कांग्रेस के प्रति उनकी विचारधारात्मक निष्ठा के कारण, सिब्बल विपक्षी एकता को प्रोत्साहित करने वाले तथा उसे आसान बना देने वाले व्यक्ति के रूप में दिखाई दे सकते हैं। वे कांग्रेस सहित, विभिन्न नेताओं के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सिब्बल न तो पहले और न ही आखिरी ''वकील-नेता'' कॉम्बीनेशन हैं

पर, स्थिति में एक फर्क जरूर आया है, पहले प्रारम्भ से ''वकील-नेता'' कॉम्बीनेशन वाला व्यक्तित्व होता था, पर अब पहले सफल व प्रभावशाली वकील बनने के बाद, राजनीति में कूदा जाता है

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। कपित सिब्बल ऐसे पहले एवं सम्भवतः अन्तिम व्यक्ति नहीं, जिन्होंने ''कानून'' और ''राजनीति'' की दो दुनियाओं के साथ सफलतापूर्वक तथा साथ-साथ निर्वहन किया हो।

संसद के उच्च सदन (राज्य सभा) में अपने वर्तमान कार्यकाल की समाप्ति के अन्तिम महीनों में, सिब्बल ने बुधवार को समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव की मौजूदगी में लखनऊ में राज्य सभा के लिये अपना नामांकन पत्र दाखिल कर दिया। ज्ञातव्य है कि समाजवादी पार्टी के नाम और चुनाव चिन्ह से सम्बन्धित में सिब्बल ने अखिलेश यादव की ओर से पैरवी की थी। इससे पहले सिब्बल अखिलेश के पिता मुलायम सिंह यादव के भी करीबी रहे बताये जाते हैं। विद्रोही जी-23 के सदस्य, सिब्बल ने घोषणा कर दी कि उन्होंने शानदार अतीत वाली पार्टी (कांग्रेस) से इस्तीफा दे दिया है तथा वे राज्य सभा का चुनाव, समाजवादी पार्टी

- **पहले वाले मॉडल में महात्मा गांधी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू और डॉ.बी.आर. अम्बेडकर थे।**
- **नये मॉडल में सिब्बल, सुब्रमण्यम स्वामी, अभिषेक मनु सिंघवी, आर.के. आनन्द हैं।**
- **सिब्बल तो साफ कहते सुने गये हैं कि, वे चारा घोटाला काण्ड में लालू यादव के वकील थे, और लालू के कारण उनकी लोकसभा में ''एंट्री'' हुई थी।**

के समर्थन के साथ, निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में लडेंगे।

देश की आजादी के समय से ही, राजनैतिक परिदृश्य पर वकील-राजनेताओं का दबदबा रहा है। चाहे वे महात्मा गांधी हों, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद हों, जवाहर लाल नेहरू हो या डॉ. बी.आर. अम्बेडकर हों। पिछले दो दशकों में, एक अलग प्रकार का वर्ग उभर कर आया हैं-ऐसे लोग, जिन्होंने अपनी जबरदस्त वकालत के कारण, राजनीति में प्रतिष्ठा अर्जित की। जैसा कि सिब्बल ने स्वयं स्वीकार किया है, वे संसद में अपने प्रवेश के लिये आरजेडी प्रमुख लालू प्रसाद के ऋणी एवं आभारी हैं, जिनकी ओर से, वे उनके चारा-घोटाला सम्बन्धी मुकदमे लड़ रहे थे। स्वर्गीय राम जेठमलानी कई राजनैतिक दलों में आये-गये, जिनमें भाजपा, जनता दल, पवित्र हिन्दुस्तान कज़ाखन्म तथा आरजेडी शामिल हैं तथा वे शिव सेना के समर्थन से राज्यसभा सदस्य भी चुने गये थे। इसी तरह असन्तुष्ट तथा मुँहफट नेता डॉ. सुब्रमन्यम स्वामी भी विभिन्न राजनैतिक दलों से जुड़े रहे हैं। भारतीय जनसंघ से लेकर जनता पार्टी तथा भारतीय जनता पार्टी तक तथा उन्होंने राजनीति, शिक्षण तथा वकालत तीनों में एक साथ अपनी दिलचस्पी बनाये रखी है। इसी श्रेणी के अन्य कांग्रेसी नेताओं में शामिल हैं। पी चिदम्बरम तथा अभिषेक मनु सिंघवी। वस्तुतः, सिंघवी राज्यसभा के लिये ममता नर्जी की तृणमूल कांग्रेस के समर्थन से चुने गये थे। वरिष्ठ वकील आर.के. आनन्द एनडीए सरकार के शासनकाल के दौरान 2000 में राज्य सभा के लिये चुने गये थे तथा बाद में उन्होंने दो लोकसभा चुनाव भी लड़े। उन्होंने पहला चुनाव 2004 में कांग्रेस टिकट पर दक्षिण दिल्ली सीट से लड़ा था तथा दूसरी कोशिश उन्होंने 2014 में फरीदाबाद लोकसभा क्षेत्र से इंडियन नेशनल लोक दल के टिकट पर की थी।

लोग अपने व्यवसायों के दौरान बीच में भी अपना रास्ता बदल लेते हैं, जबकि कुछ लोगों में इतनी और ऐसी क्षमताएं तथा कौशल हुआ करती हैं कि वे कई क्षेत्रों में एक साथ बड़ी सहजता से काम करते रहते हैं। इसमें कुछ नुकसान भी नहीं है। नैतिक प्रश्न केवल तभी उठते हैं, जब राजनैतिक दल लोगों को राज्यसभा के नामांकन के अवसर के रूप में ''रिटर्न गिफ्ट'' देते दिखाई देते हैं।

सिब्बल का इतिहास

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 25 मई। कपिल सिब्बल ने उत्तर प्रदेश से एक निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में राज्यसभा का नामांकन पत्र भरकर गांधी परिवार के मुंह पर एक करारा तमाचा जड़ा है। उत्तर प्रदेश के हाल ही सम्पन्न विधानसभा चुनावों में कांग्रेस प्रियंका गांधी की अगुवाई में सिर्फ दो सीटें ही जीत सकी थी। कपिल सिब्बल समाजवादी पार्टी के वोटों के सहारे राज्यसभा में प्रवेश करेंगे क्योंकि उनके नामांकन पत्र भरने के दौरान अखिलेश यादव मौजूद थे।

- **इस बार सिब्बल इतिहास दोहरा रहे हैं, क्योंकि पिछली बार भी सपा की मदद से पहुंचे थे राज्यसभा, हालांकि, इस बार उनका ओहदा, निर्दलीय उम्मीदवार का होगा।**

सुप्रीम कोर्ट के सर्वाधिक कुशल वकीलों में से एक सिब्बल पिछली बार भी समाजवादी पार्टी की मदद से राज्यसभा सदस्य बने थे। हालांकि इस बार वे एक निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर राज्यसभा में होंगे क्योंकि वह किसी पार्टी से सम्बद्ध नहीं हैं।

समाजवादी पार्टी से राज्यसभा के दो अन्य सदस्य बनने हैं, जिसकी घोषणा वह उचित समय पर करेगी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक-एक करके महारथी क्यों छोड़ रहे हैं पार्टी

राहुल की ''फिलॉसफी'' व भाषण में ''वैस्टर्न लिबरल'' सोच की प्रतिध्वनि तो सुनाई देती है, पर, धरातल पर जनता में यह ''विश्वास'' पैदा नहीं कर पा रही कि, इस ''फिलॉसफी'' में ही उसका भला निहित है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 25 मई। राहुल गांधी ने भारत को एक राष्ट्र की बजाय राज्यों का एक संघ बताया और इस आइडिया की विस्तृत व्याख्या की और इधर भारत में कांग्रेस जिसने उन्हें प्रमुखता दे रखी है अक्षम नेतृत्व की वजह से टूट रही है।

- **नरसिम्हा राव जब प्र.मंत्री बने थे तो, उन्होंने अल्पमत वाली सरकार पूरे समय चलायी थी तथा पूरे समय नेहरू-गांधी परिवार को पार्टी के संगठन व सरकार से एकदम दूर रखा था। क्या राजनैतिक अस्तित्व के लिए पार्टी को नरसिम्हा राव अध्याय दोबारा दोहराने का समय आ गया है।**

राहुल गांधी ने विदेश जाकर अप्रवासी भारतीयों से संवाद करना उचित समझा यद्यपि यहां कांग्रेस का जनाधार निरंतर सिकुड रहा है। वे वही बात कह रहे है जो पश्चिम हमेशा से भारत के बारे में कहता रहा है।

इस तरह की बातें पाश्चात्य लोगों को अच्छी लग सकती हैं पर इससे पार्टी को अपनी दशा सुधारने में कोई मदद नहीं मिलेगी। इससे कांग्रेस पार्टी की ऐसी छवि कदापि नहीं बनेगी जिसे सरकार चलाने का मौका दिया जाए।

उनके इंटरव्यु और प्रश्नोत्तर सत्र जरा भी प्रेरणास्पद नहीं रहे और कई बार जवाब देते समय उनकी जबान लड़खड़ाई। एक व्यक्ति के प्रति उनकी घ्रणा उभरकर आई जबकि इससे बड़े कई सवाल और मुद्दे थे। इंटरव्यु अकस्मात खत्म हो गया। क्योंकि वक्ता की बातों में तालमेल ही नहीं था।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पार्टी कार्यकर्ताओं का उच्चतम नेतृत्व की चुनाव जीतने की क्षमताओं पर भरोसा टूट रहा है। राहुल गांधी के साक्षात्कार इस कहावत पर खरे उतरते है जब रोम जल रहा था तब नीरो बंसी बजा रहा था। यहां पर हालात है लोग कांग्रेस छोड़ रहे है क्योंकि पार्टी का जहाज डूब रहा है।

गत कई वर्षों से कांग्रेस पार्टी के स्तम्भों में से एक रहे कपिल सिब्बल ने भी पार्टी छोड़ दी है और वे सपा की मदद से बतौर निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। यह एकमात्र घटना नहीं है।

इससे पहले सुनील जाखड़ ने अपनी पीड़ा जताते हुए पार्टी छोड़ी थी वे जाटों के रसूखदार नेता हैं। अश्विनी कुमार ने भी नाराजगी में पार्टी छोड़ी क्योंकि पार्टी की सत्ता में वापसी की संभावना नहीं थी।

इससे बहुत पहले युवा नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया ने पार्टी छोड़ दी थी और वे सीधे भाजपा में चले गए क्योंकि उन्हें लगता था कि कांग्रेस नेतृत्व जनमानस को उत्साहित नहीं कर सकता है और ना ही वोट ले सकता है।

उनके मित्र सचिन पायलट राजस्थान में कई वर्षों से अशान्त हैं, और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दर्डा को टिकट देगी आप

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 25 मई। कांग्रेस के पूर्व राज्यसभा सदस्य विजय दर्डा (72) आम आदमी पार्टी (आप) के टिकट पर पंजाब से पुनः राज्यसभा सदस्य बनने जा रहे हैं। पंजाब में 10 जून को राज्यसभा की दो सीटों के लिए द्विवार्षिक चुनाव हो रहे हैं।

विजय दर्डा कांग्रेस नेताओं के परिवार से है। उनके पिता जवाहर लाल दर्डा और छोटे भाई राजेन्द्र दर्डा (69) दोनों ही महाराष्ट्र की सरकारों में कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं।

समझा जाता है कि विजय दर्डा की आप सुप्रीमो अरविन्द

- **आप का इरादा, लोकमत की पीठ पर सवार होकर महाराष्ट्र में प्रवेश करे।**

केजरीवाल के साथ एक डील हुई है, जिसके अन्तर्गत वह अगले चुनावों में आप के महाराष्ट्र में प्रवेश को तीव्र करने के लिए अपने लोकमत ग्रुप ऑफ न्यूजपेपर्स से मदद करेंगे। लोकमत महाराष्ट्र के कई स्थानों से प्रकाशित होने वाला सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला दैनिक अखबार है।

राज्यसभा चुनाव से पहले सामने आती जा रही है कांग्रेस विधायकों की नाराजगी

'मुख्यमंत्री अपने मंत्री के जेल जाने से डरते हैं इसलिए रीट की सी.बी.आई. जांच नहीं करा रहे'

जयपुर, 25 मई (का.प्र.)। राज्यसभा चुनाव ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहे हैं, वैसे वैसे कांग्रेस विधायकों की नाराजगी सामने आती जा रही है। पहले डूंगरपुर विधायक गणेश घोघरा ने मुख्यमंत्री को अपना इस्तीफा भेजा और प्रतापगढ़ विधायक रामलाल मीणा ने उनका समर्थन किया। इसके बाद घोघरा सीधे दिल्ली पहुंच गए तो रामलाल मीणा ने डूंगरपुर में कांग्रेस के बिखरने की बात कही। अब कांग्रेस के बेंगू विधायक राजेंद्र विधूड़ी ने तो

- **कांग्रेस विधायक बिधूड़ी ने सार्वजनिक मंच से यह भी कहा कि, ''50 हजार से हारने वाले को राज्यमंत्री का दर्जा दे दिया, जीतने वाले को नीचे गिरा दिया।''**

सार्वजनिक रुप से कह दिया है कि मुख्यमंत्री गहलोत अपने मंत्री के जेल जाने से डरते हैं, इसलिए रीट की सीबीआई जांच नहीं करा रहे हैं।

चित्तौड़गढ़ के बेंगू से विधायक विधूड़ी अपने बयानों को लेकर पहले भी चर्चाओं में रहे हैं और अब उन्होंने फिर सार्वजनिक मंच से बयान देकर नई चर्चा छेड़ दी। विधूड़ी के बयान का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वह अपने क्षेत्र के पारसोली में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के नए भवन के लोकार्पण समारोह में बतौर अतिथि बोल रहे थे।

इस दौरान पारसोली थाना पुलिस के खिलाफ बोलते-बोलते विधूड़ी ने सीएम को भी घेर लिया। उन्होंने कहा कि, थाने से डोडाचूरा चोरी हो गया। इसकी सीबीआई जांच होनी चाहिए थी। मुख्यमंत्री ही गृहमंत्री है, उन्हें सब को सस्पेंड करना चाहिए था। सबको भगाकर सीबीआई जांच करानी चाहिए थी।

सीएम रीट मामले की जांच नहीं करवा सकते। कम से कम पारसोली थाने के मामले की तो जांच करवानी चाहिए थी।

विधूड़ी ने चित्तौड़ से कांग्रेस पार्टी के एक वरिष्ठ नेता का नाम लिए बिना कहा कि जो नेता दो बार 50 हजार वोटों से हारा है, उसको मुख्यमंत्री ने राज्यमंत्री का दर्जा दे दिया और जीतने वाले को नीचे गिरा दिया। हम विधायक जीतेंगे तभी तो आप मुख्यमंत्री बनोगे। हमें हमारा कार्यकर्ता ही जिताएंगे। जब कार्यकर्ता ही मजबूत नहीं होगा, उसकी कोई सुनेगा नहीं तो हम भी कैसे जीतेंगे।

एक अनार सौ बीमार

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 25 मई। अगले वर्ष राजस्थान विधानसभा चुनाव होने हैं, इसलिये विक्षुब्ध एवं उत्तेजित जाति-आधारित नेताओं ने अपना दमखम एवं तेवर दिखाने शुरु कर दिये हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से यह कहना शुरु कर दिया है कि पार्टी को अन्य जातियों को भी समायोजित करना चाहिये, केवल जाटों को ही नहीं, जैसा कि हो रहा है। उन्होंने कहा कि पी.सी.सी. अध्यक्ष जाट हैं, ए.आई.सी.सी. महासचिव हरीश

- **जाट के खिलाफ वातावरण बना रहे हैं राजपूत, आदिवासी, मुस्लिम आदि, राज्यसभा टिकट के लिये।**

चौधरी जो राजस्थान के बाड़मेर क्षेत्र से हैं, जाट हैं तथा गहलोत सरकार के 4-5 मंत्री जाट हैं। उन्होंने कहा है कि इससे जातियों का प्रतिनिधित्व असंतुलित हो गया है।

मुस्लिमों का कहना है कि वे राज्य की आबादी का 10 प्रतिशत हिस्सा हैं तथा उन्हें राज्यसभा की एक सीट मिलनी चाहिये। आदिवासी भी स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं तथा अपनी उपेक्षा को लेकर मुखर होने लगे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)